वितान

(प्र.1) निर्मल स्वर - लता के स्वरो में निर्मलता है। उनके गीत के किन्ही दो शब्दो का अंतर स्वरो के आलाप द्वारा सुन्दर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनो शब्द विलीन होते होते एक - दूसरे में मिल जाते है। लता के गानो में यह बात सहज व स्वाभाविक है

(प्र.2) लता के गाने में एक नादमय उच्चार है उनके गीत के किन्ही दो शब्दो का अन्तर स्वरो के आलाप द्वारा सुन्दर रीति से भरा रहता है लेखक का मानना है की लता के करुण रस के गाने ज्यादा अच्छे नही है, उसने मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने अच्छे तरीके से गाए है।

प्र.3 करुण रस - इसका स्थायी भाव शोक होता है इस रस मे किसी अपने का विनाश या अपने का वियोग, ध्वनाश एवं प्रेमी से सदैव विछुड जाने या दूर चले जाने से जो दुःख या वेदना उत्पन्न होती है उसे करुण रस कहते है यद्यपि वियोग श्रृंगार रस में भी दुःख का अनुभव होता है लेकिन वहाँ पर दूर जाने वाले से पुनः मिलन की आशा बंधी रहती है।

Scanned with CamScanner

प्र. 4 कुई की खुदाई और चिनाई करने वाले को चेलवाजी या चिजारा कहा जाता है और उनका काम चेजा कहलाता है चेलवाजी या चिजारा कुई के भीतर लगभग तीस - पैंतीस हाथ तक खुदाई कर चुके है। कुई का व्यास बहुत ही संकरा होता है जिस के कारण खुदाई का काम बसौली से किया जाता है। कुई की गहराई में गरमी को कम करने के लिए ऊपर जमीन मे खड़े लोग बीच - बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर के साथ नीचे फेंकते है। इससे ताजी हवा नीचे जाती है और गर्म हवा ऊपर लौट जाती है। ऊपर से फेंकी जा रही रेत से बचने के लिए चेलवाजी अपने सिर पर चाक का एक बर्तन टोप की तरह पहनते है।

प्र. 6 राजस्थान की मरुभूमि में पानी के स्रोत कुई का वर्णन किया गया है। कुई का निर्माण राजस्थान मे जल संरक्षण के लिए किया जाता है।

प्र. 7 वैदिक काल

प्र. 8 अलग - 2 राज्यो के ये नृत्य भिन्न - भिन्न नामो से जाने जाते है। पर इनमे एक समानता है ये सभी नृत्य समूह मे होते है। सभी का संम्बन्ध प्रकृति और जीवन से है, सभी में स्त्री - पुरुष एक साथ मिलकर नाचते है। राज्य की सीमाएँ भला कला को कैसे बांध सकती है।

प्र. 9 नाट्यशास्त्र में 'नर्त्य' और नृत्य दो शब्द मिलते है। ये दोनो अभिनय के अलग - अलग रूप है। नर्त्य - यानी अभिनय। इसमे शब्द और भंगिमा महत्वपूर्ण है। नृत्य में भाव और भंगिमा महत्वपूर्ण है।

प्र. 10 भारत के प्राचीनतम संगीत का वर्णन वैदिक काल में मिलता है। विद्वान लगभग पांच हजार ई. वर्ष पूर्व के समय को वैदिक काल कहते है।

Scanned with CamScanner

इस समय दो प्रकार के संगीत का उल्लेख मिलता है एक - मार्गी तथा इतर - देसी। मार्गी संगीत धार्मिक समारोह से जुड़ा था। और नियम और अनुशासन से बधा था। देसी लोक से जुड़ा था लोक रुचि के अनुसार यह समूह में भी गाया जाता था। सामवेद में गाने के जो निर्देश दिए गए है उससे यह पता चलता है कि वैदिक महर्षियो के पूजा और मंत्रोच्चार के तरीके को ही कहते थे।

प्र. 11 शैल चित्रो से

प्र. 12 अंजता की गुफा चौथी से छठी सदी के बीच गुप्त साम्राज्य कलाओ के लिए स्वर्ण युग कहलाता है